ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 **PP. No.- 113-115**

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.- IV, Issues-38, YEAR- Oct.-Dec.2025

महिला सशक्तिकरण में स्वयंसहायता समूह की भूमिका : (उ0प्र0 के श्रावस्ती जनपद का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन)

डॉ0 वेद प्रकाश द्विवेदी
असि0 प्रोफेसर– समाजशास्त्र, श्रावस्ती (उ0प्र0) भारत

Received-04.10.2025, Revised-11.10.2025, Accepted-17.10.2025 **E-mail : vedprakashd1991@gmail.com**

सारांशः ***महिला और पुरूष विकास रूपी रथ के दो पहिए हैं, इसलिए विकास रूपी रथ को तीव्र गति से आगे बढनें के लिए दोनों पहियों को साथ–साथ चलना बेहद जरूरी है, क्योंकि रथ एक पहिए के बल पर आगे नहीं बढ सकता अर्थात् कोई भी देश इस आधी आबादी (महिला) को नजरन्दाज करके विकास नहीं कर सकता। जहाँ तक भारत की बात है, तो यहाँ पर भी महिलाओं की जनसंख्या (जनगणना 2011 के अनुसार) 48.53 प्रतिशत है, जो पुरूषों के लगभग बराबर ही है। इतिहास के पल्लों को पलटनें पर पता चलता है, कि यहाँ पर कुछ समय को छोड दिया जाय तो अधिकांश समय पर महिलाओं को अनेक अधिकारों से वंचित रहना पडा है। वैसे भारत की 68.8 प्रतिशत जनसंख्या (जनगणना 2011 के अनुसार) गाँवों में निवास करती हैं जहाँ पर शिक्षा का स्तर काफी निम्न है, खासकर महिलाएं तमाम अधिकारों व कर्तव्यों से अनभिज्ञ रही हैं। आधुनिक युग में तमाम समाजसुधारकों के प्रयास व भारत के आजाद होनें के पश्चात् भारत सरकार नें महिलाओं को समाज के मुख्य धारा में लानें एवं उन्हें सशक्त बनानें के लिए अनेक विकास कार्यक्रमों का संचालन किया है, उसी के क्रम में ग्रामीण विकास मंत्रालय भारत सरकार की अति महत्वाकांक्षी 'दीनदयाल अन्त्योदय योजना–राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन' भी महिलाओं को सशक्त बनानें के लिए प्रतिबद्ध हैं। इसी मिशन के तहत गठित स्वयंसहायता समूह ग्रामीण महिलाओं स्वावलम्बी व आत्म निर्भर बना रहा है, जिससे ग्रामीण महिलाए आर्थिक एवं सामाजिक रूप से सशक्त हो रही है। ग्रामीण महिलाओं में होनें वाला यह परिवर्तन भारतीय समाज के विकास में चार चाँद लगाकर विकसित राष्ट्र बनानें में अकल्पनीय भूमिका निभा रहा है।***

कुंजीभूत शब्द– विकास, महिलाएं, स्वयंसहायता समूह, आत्मनिर्भरता, महिला व पुरूष, विकास रूपी रथ, स्वावलंबन, सशक्तिकरण।

भारत में स्वयंसहायता समूह की शुरूआत 1970 के दशक में हुई थी, जब 1972 में गुजरात के अहमदाबाद में इला भट्ट नें स्वनियोजित महिला संघ (SEWA) की स्थापना की। 1992 में एस के कालिया समिति की सिफारिस पर राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक (नाबार्ड) नें स्वयं सहायता समूह बैंक लिंकेज कार्यक्रम शुरू किया। 1991 में ग्रामीण क्षेत्रों में स्वरोजगार को बढावा देनें के लिए स्वर्ण जयन्ती ग्राम स्वरोजगार योजना शुरू किया गया। यही योजना आगे चलकर सन् 2011 ई0 में राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन में बदल गई जो ग्रामीण गरीबी उन्मूलन के लिए वरदान साबित हुई। स्वयंसहायता समूह इसी योजना के तहत संगठित महिलाओं का एक समूह है। स्वयंसहायता समूह 10 से 20 महिलाओं का छोटा–छोटा समूह होता है, जिसमें एक समान स्थिति की महिलाएं एक साथ एकत्रित होकर एक दूसरे के सहयोग के लिए समर्पित रहती हैं। साथ ही आत्मनिर्भर व स्वावलम्बी होकर महिला सशक्तिकरण को वास्तविकता के धरातल पर उतारती हैं, जिससे जहाँ एक ओर महिलाएं सशक्त होती हैं वहीं दूसरी ओर सशक्त भारत का निर्माण होता है। महात्मा गाँधी नें कहा था– 'एक पुरूष को शिक्षित करनें से केवल वही एक पुरूष ही शिक्षित होता है, परन्तु एक महिला को शिक्षित करनें से दो परिवारों को शिक्षित किया जा सकता है, जिससे एक सशक्त राष्ट्र का निर्माण हो सकता है।' शायद इसी सोंच के साथ देश में स्वयंसहायता समूह की शुरूआत हुई थी। राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन के तहत अब तक 2022 के अनुसार पूरे देश में 75 लाख स्वयं सहायता समूह गठित किए जा चुके हैं। राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन के पोर्टल पर उपलब्ध आंकडों के अनुसार देश के 707 जिलों में स्वयंसहायता समूह का गठन किया जा चुका है। जिसमें 75,34,852 संगठित स्वयंसहायता समूह हैं जिसमें 8,21,86,548 महिलाएं सदस्य हैं। ये महिला सदस्य न केवल आपस में आत्मनिर्भर होकर एक दूसरे की आवश्यकताओं को पूरा करती हैं, बल्कि समाजसेवा में भी इनका अकल्पनीय योगदान देखनें को मिलता है, जैसे कोरोना में देखनें को मिला। स्वयंसहायता समूह नें कोरोना में लोगों को बृहद पैमाने पर जागरूक किया। जनमानस के लिए कोरोना से बचाव हेतु सामाग्री जैसे– मास्क, सैनिटाईजर, पीपीईकिट का निर्माण कर लोगों को वितरित किया। साथ ही सार्वजनिक रसोई चलाकर भोजन दिया और लोगों को टीका लगवानें के लिए प्रेरित कर टीकाकरण स्थल तक पहुँचानें में जो मदद किया उसे कौन भूल सकता है। इसीलिए तो प्रधानमंत्री जी नें 12 अगस्त 2021 को 'आत्मनिर्भर नारी शक्ति संवाद' कार्यक्रम में स्वयंसहायता समूह सदस्यों से संवाद करते हुए कहा था कि स्वयं सहायता समूह नें देश में नई क्रांति का सूत्रपात किया है।'

राष्ट्रीय स्तर पर स्वयंसहायता समूह की स्थिति

देश के कूल आच्छादित जनपद	कूल संगठित स्वयंसहायता समूह	कूल सदस्य संख्या
707	75,34,852	8,21,86,548

स्रोतः कुरूक्षेत्र मासिक पत्रिका अप्रैल 2022,

प्रस्तुत शोधपत्र महिला सशक्तिकरण में स्वयंसहायता समूह की भूमिका– उ0प्र0 के श्रावस्ती जनपद पर आधारित है। उक्त शोधकार्य में शोधकर्त्ता द्वारा यह जानने का प्रयास किया गया है, कि भारत सरकार द्वारा संचालित राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन के तहत गठित स्वयंसहायता समूह से उ0प्र0 के श्रावस्ती जनपद की महिलाओं के जीवन स्तर में क्या परिवर्तन घटित हुआ है, महिलाएं क्या वास्तविक रूप से आर्थिक व सामाजिक रूप से सशक्त हुई हैं, महिलाओं का इसके सन्दर्भ में क्या विचार हैं।

साहित्यावलोकन– किसी भी शोध कार्य को करनें से पूर्व शोध से सम्बन्धित साहित्य का अवलोकन कर लेना अति आवश्यक होता है, क्योंकि ऐसा करनें से शोध में त्रुटि की सम्भावना कम होती है और शोध में मौलिकता आती है।

शशि पाण्डेय (2016) नें अपनें लेख 'स्वयंसहायता समूह, लघु ऋण एवं महिला सशक्तिकरण– एक अध्ययन' में बताया कि स्वयंसहायता समूह नें महिलाओं को समाज के मुख्य धारा से जोडकर उनके सामाजिक, आर्थिक व राजनीतिक जीवन में क्रान्तिकारी परिवर्तन कर सशक्तिकरण की दिशा की ओर तेजी सं उन्मुख किया है।

अनुरूपी लेखक/ संयुक्त लेखक

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.- IV, Issues-38, YEAR- Oct.-Dec.2025

हेना नकवी (2022) नें अपनें लेख 'सामूहिक नारी शक्ति के प्रतीक स्वयंसहायता समूह' में बताया है कि स्वयंसहायता समूह से न केवल महिलाएं स्वयं सशक्त हो रही हैं, बल्कि इससे एक सशक्त भारत का निर्माण हो रहा है।

आर0पी0 पाण्डेय व अन्य (2024) नें अपनें लेख 'भारतीय ग्रामीण विकास में स्वयंसहायता समूह का योगदान–एक आर्थिक अध्ययन' में बताया कि स्वंयसहायता समूह व स्वरोजगार के माध्यम से ग्रामीण महिलाएं आर्थिक दृष्टि से काफी समृद्ध हुई हैं।

डॉ0 जे0 के0 कुशवाहा व अन्य (2025) नें अपनें लेख 'स्वयंसहायता समूह द्वारा महिलाओं का आर्थिक सशक्तिकरण एवं विकास' में बताया कि सरकार द्वारा समय–समय पर संचालित तमाम आर्थिक विकास कार्यक्रम महिलाओं को काफी सहायता प्रदान करते हैं। हलांकि उनके सामनें तमाम चुनौंतियाँ भी रहती हैं।

शोध के उद्देश्य– प्रस्तुत शोधकार्य के निम्न उद्देश्य हैं:

- श्रावस्ती जनपद में स्वयंसहायता समूह के प्रति महिलाओं में जागरूकता का पता लगाना।
- स्वयंसहायता समूह से महिलाओं के जीवन यापन पर क्या प्रभाव पडा है।
- इस योजना के प्रति महिलाओं के क्या विचार हैं।
- स्वयंसहायता समूह से महिलाओं में आर्थिक व सामाजिक सशक्तता के स्तर का पता लगाना ।

शोध परिकल्पनाए– प्रस्तुत अध्ययन में निम्न शोध परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया है:

- श्रावस्ती जनपद की स्वयंसहायता समूह की महिलाएं अन्य महिलाओं का भी सहयोग करती हैं।
- जनपद की अधिकांश महिलाएं स्वयंसहायता समूह की सदस्य हैं।
- स्वयंसहायता समूह से महिलाओं के जीवन स्तर में निरन्तर सुधार हो रहा है।
- स्वयंसहायता समूह से महिलाएं आर्थिक व संमाजिक रूप से सशक्त हुई हैं।

आंकडा संकलन विधि– प्रस्तुत शोध कार्य को पूर्ण करनें हेतु प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों स्रोतों का प्रयोग किया गया है प्राथमिक आंकडे साक्षात्कार अनुसूची से भरे गये हैं तथा द्वितीयक आंकडे श्रावस्ती जनपद के विविध कार्यालयों एवं विभागों से प्राप्त किए गये हैं।

अध्ययन का समग्र व निदर्शन– महिला सशक्तिकरण में स्वयंसहायता समूह की भूमिका को जानने के उद्देश्य से उ0प्र0 के श्रावस्ती जनपद का चयन उददेशपूर्ण निदर्शन विधि द्वारा किया गया हैं। जनपद की सम्पूर्ण जनसंख्या (जनगणना 2011 के अनुसार) 1117361 है। जिसमें पुरूष जनसंख्या 593897 महिला जनसंख्या 523464 जनपद के समस्त स्वयंसहायता समूह महिला उत्तरदात्रियों से सूचना प्राप्त कर पाना एक दुष्कर कार्य है, इसलिए शोधार्थी द्वारा अध्ययन की सुलभता एवं अनुसंधान की सीमाओं को दृष्टिगत् श्रावस्ती जनपद के तीनों तहसीलों (इकौना, भिनगा व जमुनहा) से 70–70 स्वयंसहायता समूह महिला सदस्यों का चयन उदेश्यपूर्ण निदर्शन विधि द्वारा किया गया है। इस प्रकार सम्पूर्ण अध्ययन कुल 210 उत्तरदात्रियों पर आधारित है।

निदर्श में चयनित महिला उत्तरदात्रियों से पूछे गये कुछ महत्त्वपूर्ण प्रश्न

सारिणी सं0–1

स्वयंसहायता समूह से महिलाओं के जीवन स्तर में सुधार हुआ है के प्रति उत्तरदात्रियों के विचार

क्रम संख्या	उत्तरदात्रियों का मत	आवृत्ति	प्रतिशत
1	हाँ	168	80.00
2	नही	08	04.00
3	कुछ कह नहीं सकते	34	16.00
	योग	**210**	**100.00**

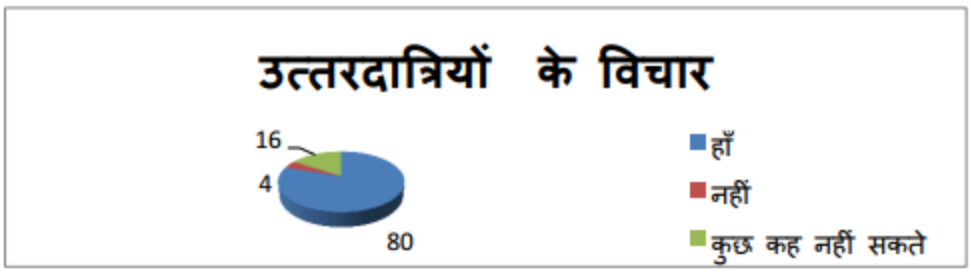

ग्राफ– क

सारिणी सं0–2

स्वयंसहायता समूह ग्रामीण महिला सशक्तिकरण में सहायक है, के प्रति उत्तरदात्रियों के विचार

क्रम संख्या	उत्तरदात्रियों का मत	आवृत्ति	प्रतिशत
1	हाँ	151	72.00
2	नही	19	09.00
3	कुछ कह नहीं सकते	40	19.00
	योग	**210**	**100.00**

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.- IV, Issues-38, YEAR- Oct.-Dec.2025

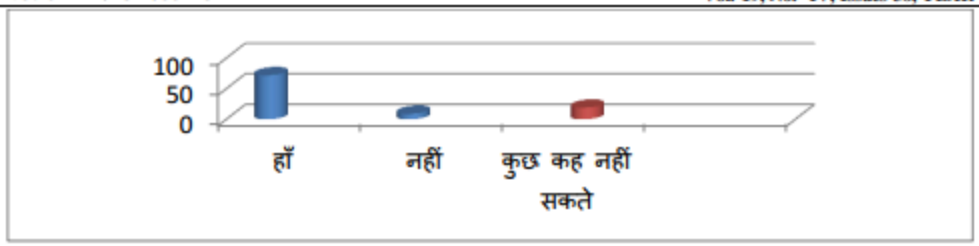

ग्राफ– ख

सारिणी सं0–3

क्या आप सब अन्य महिलाओं का भी सहयोग करती है, के प्रति उत्तरदात्रियों के विचार

क्रम संख्या	उत्तरदात्रियों का मत	आवृत्ति	प्रतिशत
1	हाँ बराबर	147	70.00
2	कभी नही	10	05.00
3	कभी–कभी	53	25.00
	योग	**210**	**100.00**

निष्कर्ष– उपरोक्त सारिणी संख्या 01 में उत्तरदात्रियों से प्रश्न किया गया कि क्या स्वयंसहायता समूह से महिलाओं के जीवन स्तर में सुधार हुआ है। जिसमें 80 प्रतिशत उत्तरदात्रियों नें हाँ में 4 प्रतिशत उत्तरदात्रियों नें न में जबाव दिया जबकि 16 प्रतिशत उत्तरदात्रियों नें कोई मत प्रकट नहीं किया। इस तरह इस सारिणी के माध्यम से मेरी तीसरी उपकल्पना सत्य सिद्ध होती है। सारिणी संख्या 02 में इससे महिला सशक्तिकरण के बारे में पूँछा गया तो 72 प्रतिशत उत्तरदात्रियों नें कहा कि इससे महिलाएं सशक्त हो रही हैं, जबकि 9 प्रतिशत महिलाओं नें कहा कि इससे कोई बदलाव परिलक्षित नहीं हुआ है। वहीं 19 प्रतिशत उत्तरदात्रियों नें कहा हम कुछ कह नहीं सकते। इस तरह इस सारिणी के माध्यम से मेरी चौथी उपकल्पना सत्य सिद्ध होती है। सारिणी संख्या 03 में उत्तरदात्रियों से यह प्रश्न किया गया कि क्या क्या आप सब अन्य महिलाओं का भी सहयोग करती है, तो 70 प्रतिशत उत्तरदात्रियों नें हाँ में 5 प्रतिशत नहीं में उत्तर दिया जबकि 25 प्रतिशत उत्तरदात्रियों नें कहा कभी–कभी सहयोग करते हैं। इस तरह इस सारिणी के माध्यम से मेरी पहली उपकल्पना आंशिक रूप से सत्य सिद्ध होती है। अतः उपरोक्त विवरण के आधार पर हम कह सकते हैं, कि स्वसंसहायता समूह से महिलाएं तीव्र गति से स्वावलम्बी, आत्म निर्भर बननें के साथ–साथ आर्थिक व सामाजिक रूप से सशक्त बन रही हैं, जिससें एक स्वच्छ, स्वस्थ व सशक्त भारत का निर्माण हो रहा है।

सुझाव– बेसक स्वयं सहायता समूह से महिलाएं स्वावलम्बी, आत्मनिर्भर व सशक्त बन रही हैं, जिससे एक सशक्त देश का निर्माण हो रहा है। महिलाएं आपस में मिलजुलकर अन्य महिलाओं के तमाम आवश्यकताओं की पूर्ति भी कर के उनको भी साथ लेकर चलनें का प्रयास कर रही हैं, लेकिन श्रावस्ती जनपद में महिला शिक्षा का स्तर जनगणना 2011 के अनुसार, मात्र 35 प्रतिशत ही है जो उ0प्र0 में सबसे निचले पायदान पर आता है। इसलिए जरूरी है कि श्रावस्ती जैसे अति पिछड़ें जनपदों में कोई भी विकास कार्यक्रम या योजना सरकार द्वारा चलाया जाय तो घर–घर उसका प्रचार प्रसार कराया जाय, उसके फायदे के बारे में महिलाओं को चित परिचित कराया जाय। क्योंकि जबतक शत् प्रतिशत महिलाओं की भागीदारी किसी कार्यक्रम में सुनिश्चित नहीं होगी तबतक किसी भी कार्यक्रम को सफल बना पाना सम्भव नही होगा और जब तक कोई विकास कार्यक्रम सफल नहीं होगा तबतक देश का तीव्र गति से विकास सम्भव नहीं होगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. https://censusofindia.gov.com
2. https://nicshrawasti.in
3. https://nrlm.gov.in
4. Goode and Hatt.(1952) ''Methods of Social Research.'' Mcgraw Hill Book Co, New York, p. 10-20.
5. Young, Hsin Pao. ''Fct People with Rural People.'' p. 36-37.
6. Ahuja, Ram. (2015) ''Social Research.'' Rawat Publications, Jaipur, p.80-100.
7. शशि पाण्डेय (2016) 'स्वयंसहायता समूह, लघु ऋण एवं महिला सशक्तिकरण– एक अध्ययन' IJSSS, VOL-4 ISSUE- 2 page no- 64-68.
8. हेना नकवी, 2022'सामूहिक नारी शक्ति के प्रतीक स्वयंसहायता समूह' कुरूक्षेत्र मासिक पत्रिका अप्रैल 2022. Pg. no.42-45.
9. आर0पी0 पाण्डेय व अन्य (2024) 'भारतीय ग्रामीण विकास में स्वयंसहायता समूह का योगदान–एक आर्थिक अध्ययन' IJRSS, page no 57-66.

*****